E-ISSN: 3048-6041 | Volume-1, Issue-10 | October 2024

जनसंख्या वृद्धि का परिदृश्य : बलिया जनपद का एक भौगोलिक अध्ययन

विनीत कुमार गुप्ता [1], डॉ0 शिव प्रसाद [2]

[1] शोध छात्र, भूगोल विभाग, सतीश चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बलिया

[2] विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग, सतीश चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बलिया

सारांश :–

अध्ययन क्षेत्र अपने विशिष्ट प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक गुणों के फलस्वरुप प्राचीन काल से ही मानव को अपनी ओर आकर्षित करता रहा है। जिसके कारण कुछ प्रारंभिक समयों को छोड़कर इस क्षेत्र की जनसंख्या में सदैव वृद्धि होती रहती है। शोध क्षेत्र में 1881 से ही जनगणना प्रारंभ होने का उल्लेख मिलता है। किंतु 1891 से पूर्व जनसंख्या संबंधी आंकड़े समुचित रूप से उपलब्ध नहीं है, इसलिए अध्ययन में 1891 से 2011 तक की जनसंख्या संबंधी आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि को चार अवस्थाओं में विभक्त कर अध्ययन किया गया है, जिसमें जनसंख्या वृद्धि का प्रथम अवस्था 1921 से पूर्व, द्वितीय अवस्था 1931 से 1951 तक, तृतीय अवस्था 1961 से 1991 तक व चतुर्थ अवस्था 1991 के बाद तक है। अध्ययन क्षेत्र में 1891 से 2011 तक के जनसंख्या वृद्धि को भी तालिका में विभक्त किया गया है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि 1891 में जनसंख्या 938101 थी, जो 2011 में बढ़कर 3239774 हो गई।

जनसंख्या के क्षेत्रीय परिदृश्य के अंतर्गत 1981–1991, 1991–2001 व 2001–2011 के मध्य जनसंख्या वृद्धि को प्रदर्शित किया गया है, जिसमें 2001–2011 में अति उच्च जनसंख्या वृद्धि के अंतर्गत 3 विकासखंड बांसडीह, रेवती व सोहाव, उच्च जनसंख्या वृद्धि के अन्तर्गत भी 3 विकासखण्ड पन्दह, गड़वार व बेलहरी सम्मिलित है जबकि मध्यम जनसंख्या वृद्धि के अंतर्गत 7 विकासखंड सियर, नगरा, चिलकहर, नवानगर, हनुमानगंज, दुबहड़ व मुरलीछपरा सम्मिलित है, जबकि निम्न जनसंख्या वृद्धि के अंतर्गत अध्ययन क्षेत्र के दो विकासखंड रसड़ा व मनियर आते है वही अति निम्न श्रेणी के अंतर्गत दो विकासखंड बेरूआरबारी व बैरिया आते हैं। जनसंख्या वृद्धि के प्रभावको के अंतर्गत प्राकृतिक व सांस्कृतिक कारकों का भी अध्ययन किया गया।

मुख्य शब्दः–जनसंख्या वृद्धि,जनसंख्या ह्रास, प्रतिशत, विकासखण्ड़, श्रेणी, निरपेक्ष वृद्धि, अवस्था, अति उच्च, उच्च, मध्यम, निम्न, अति निम्न, प्रभावक, प्राकृतिक कारक, सांसकृतिक कारक आदि।

प्रस्तावना

प्राकृतिक प्रदत्त सभी साधनों में मानव सर्वश्रेष्ठ सर्वशक्तिमान एवं सर्वाधिक क्रियाशील संसाधन है। वह प्राकृतिक परिवेश का मात्र अंग ही नहीं है बल्कि परिवेश का निर्माण भी करता है। इस प्रकार मनुष्य स्वयं संसाधन एवं संसाधन कर्ता भी है।[1] किसी भी क्षेत्र की जनांकिकीय गत्यात्मकता पर जनसंख्या वृद्धि के समान संभवत अन्य किसी जनसंख्या कारक का प्रभाव दृष्टिगत नहीं होता है।[2] किसी प्रदेश की जनसंख्या वृद्धि उसके आर्थिक विकास सामाजिक जागरूकता सांस्कृतिक आधार ऐसी घटनाओं एवं राजनीतिक विचारधारा की सूचक होती है तथा अन्य जनसंख्या विशेषताएं भी जनसंख्या वृद्धि से निकट संबंध होती है[3]। तो जनसंख्या वृद्धि का ज्ञान जनांकिकीय तथ्यों के साथ–साथ जनांकिकी तथ्यों के मध्य अंतर निहित सह संबंधों की जानकारी के लिए प्रस्तुत करती है। जनसंख्या में वृद्धि से तात्पर्य किसी विशिष्ट अवधि में किसी विशेष क्षेत्र में जनसंख्या में हुए धनात्मक परिवर्तन से है[4]।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य बलिया जनपद में जनसंख्या वृद्धि के परिदृश्य का अध्ययन करना है, साथ ही विकासखंड स्तर पर जनसंख्या वृद्धि परिदृश्य को व्यक्त करते हुए जनसंख्या वृद्धि के प्रभाव को स्पष्ट करना है।

अध्ययन क्षेत्र

बलिया जनपद उत्तर प्रदेश के अंतिम पूर्वी छोर पर आजमगढ़ मण्डल के अन्तर्गत निचली गंगा–घाघरा दोआब में 25^0 33′ उत्तरी अक्षांश से 26^0 11′ उत्तरी अक्षांश एवं 83^0 28′ पूर्वी देशान्तर से 84^0 39′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थिर है। जिसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 3168 वर्ग किलोमीटर है। इसकी पूरब पश्चिम लम्बाई 119 किलोमीटर एवं पश्चिम मे अधिकतम चौड़ाई 42 किलोमीटर है जो पूरब में मात्र एक किलोमीटर रह जाती है। इस तरह इस जनपद का स्वरूप त्रिभुजाकार है। जिसके उत्तरी सीमा पर घाघरा नदी दक्षिणी सीमा पर गंगा एवं पश्चिमी सीमा के कुछ भागों पर छोटी सरयू (टौंस) नदी प्रवाहित होती है। इन नदियों के कारण इस जनपद की सीमा रेखा काफी टेढ़ी–मेढ़ी हो गयी है, क्योंकि सीमाकंन प्रायः नदियों की धारा के आधार पर ही हुआ है। इसके उत्तरी–पूर्वी भाग एवं दक्षिणी–पूर्वी भाग पर बिहार राज्य के क्रमशः सीवान तथा सारण (छपरा) एवं बक्सर तथा भोजपुर जनपद की सीमाएं मिलती हैं, जबकि उत्तरी एवं पश्चिमी भाग पर क्रमशः देवरिया तथा गाजीपुर एवं मऊ जनद (उ.प्र.) की सीमाएं मिलती हैं (मानचित्र सं0 1)।

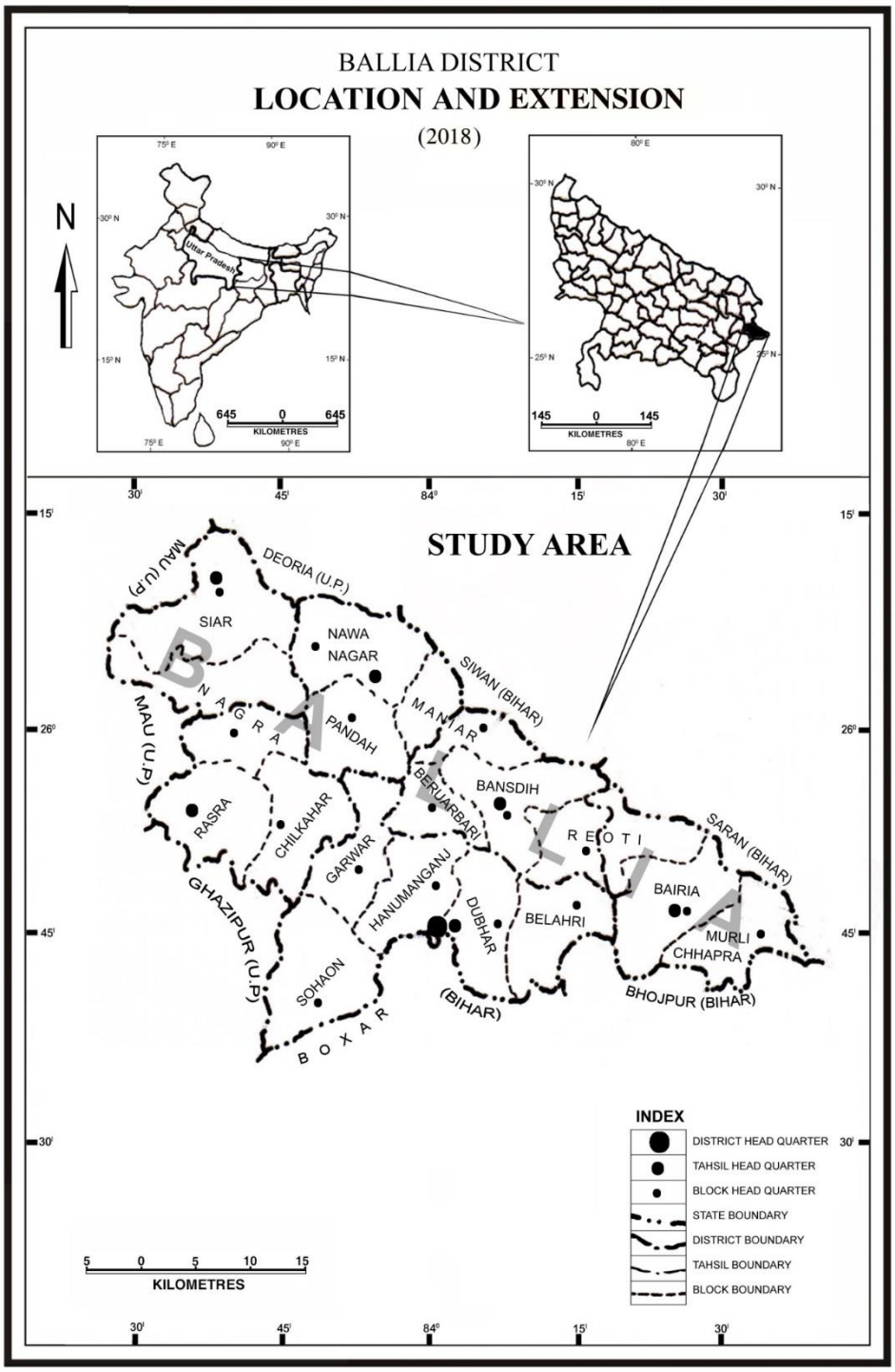

Fig.1

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग करते हुए बलिया जनपद की 1881–2011 तक के मध्य हुई जनगणना से प्राप्त आंकड़ों को एकत्रित कर दशक वार जनसंख्या वृद्धि के परिदृश्य

का विश्लेषण किया गया है। निरपेक्ष जनसंख्या वृद्धि प्राप्त करने के लिए विगत वर्ष या दशक की जनसंख्या उसके बाद के जनगणना वर्ष या दशक की जनसंख्या से घटाते हैं जबकि प्रतिशत अंतर निकालने के लिए निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग प्रस्तुत अध्ययन में किया गया है।

सूत्र–

$$\text{PC} = \frac{Pn - P0}{P0} X100$$

जहॉ

PC= प्रतिशत अंतर

Pn= अभिनव या उत्तर काल की जनसंख्या

P0= प्रारंभिक काल या आधार वर्ष की जनसंख्या

अध्ययन की व्याख्या

जनसंख्या वृद्धि–

संपूर्ण देश की भांति अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि बहुत तीव्र गति से हुई इस जनसंख्या वृद्धि को प्रभावित करने में अनेक कारको जैसे– सामाजिक, आर्थिक, प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक तत्वों का सहयोग रहा है। इसके साथ ही जन्म दर व मृत्यु दर में भी जनसंख्या वृद्धि में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। चूकि बलिया जनपद अपने विशिष्ट प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक गुणों के फल स्वरुप प्राचीन काल से ही मानव को अपनी ओर आकर्षित करता रहा है, जिसके कारण कुछ प्रारंभिक समयों को छोड़कर इस क्षेत्र की जनसंख्या में सदैव वृद्धि होती रहती है। जनसंख्या वृद्धि के सम्यक विश्लेषण से ही मानव एवं तत्संबंधित संसाधनों के अंतर्संबंधों की वर्तमान एवं भविष्य के संदर्भ में सारभूत अभिव्यंजना की जा सकती है।

जनसंख्या वृद्धि की अवस्थाएं–

सामान्यत किसी क्षेत्र के जनसंख्या वृद्धि के स्वरूपों का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि प्रत्येक क्षेत्र के लिए एक समय विशेष में जनसंख्या वृद्धि का स्वरूप एक समान रहता है पुनः किसी कारण उसमें अचानक वृद्धि या कमी अनुभव की जाती है[4] और अध्ययन क्षेत्र के जनसंख्या वृद्धि के स्वरूप को देखने से स्पष्ट होता है कि क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि के कुल चार चरण अनुभव किये जा सकते हैं। तालिका संख्या 1 को देखने से स्पष्ट होता है कि सन् 1901से 2011 तक के वर्षों में जनसंख्या वृद्धि का स्वरूप निम्न रहा है, जिसे सामान्य रूप से चार अवस्थाओं में विभक्त किया जा सकता है।

1– प्रथम अवस्था (सन 1921 से पूर्व)–

तालिका संख्या 1 से स्पष्ट है कि इस प्रथम अवस्था में अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि की दर ऋणात्मक रही है। जो सन 1911 में –14.26 प्रतिशत व सन 1921 में –1.75 प्रतिशत आता है इस प्रकार पूर्व में उल्लेख किया गया है कि सन 1901 में अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि 5.47 प्रतिशत रही है। इस प्रकार सन् 1921 से पूर्व के समय को अध्ययन क्षेत्र के लिए जनसंख्या वृद्धि का निम्न स्तर की अवस्था कहा जा सकता है।

तालिका सं0 1

बलिया जनपद : जनसंख्या में ह्रास एवं वृद्धि

वर्ष	कुल जनसंख्या	ह्रास–वृद्धि	ह्रास–वृद्धि प्रतिदशक (प्रतिशत में)	उत्तर प्रदेश की जनसंख्या में ह्रास–वृद्धि (प्रतिशत में)
1881	942465	-	-	-
1891	938101	- 4364	- 0.46	-
1901	989420	+ 51319	+ 5.47	-
1911	848371	- 141049	- 14.26	- 0.97
1921	833510	- 44861	- 1.75	- 3.08
1931	915855	+ 82345	+ 9.88	+ 6.66
1941	1057485	+ 141630	+ 15.46	+ 13.57
1951	1198916	+ 141431	+ 13.37	+ 21.82
1961	1344016	+ 145100	+ 12.10	+ 16.66
1971	1588935	+ 244919	+ 18.22	+ 19.79
1981	1849708	+ 260773	+ 16.41	+ 25.48
1991	2262273	+ 412565	+ 22.30	+ 25.81
2001	2761620	+ 499347	+ 22.07	+ 25.85
2011	3239774	+ 478154	+ 17.31	+ 20.22

स्रोत– सेन्सस ऑफ इण्डिया, 2011 उ0प्र0

2– द्वितीय अवस्था (1931 – 1951 तक)–

तालिका संख्या 1 व मानचित्र सं0 2 से स्पष्ट है की जनसंख्या वृद्धि के इस द्वितीय अवस्था में अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि का औसत 13.04 प्रतिशत रहा है। स्पष्ट है कि इस अवस्था में सन् 1931 में जनसंख्या वृद्धि दर 9.88 प्रतिशत, सन् 1941 में 15.46 प्रतिशत व सन् 1951 में 13.37 प्रतिशत रही है। इस प्रकार सन् 1951 के पूर्व के समय को अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि के औसत स्तर के आधार पर इस समय काल को जनसंख्या वृद्धि का मध्यम स्तर माना जा सकता है।

E-ISSN: 3048-6041 | Volume-1, Issue-10 | October 2024

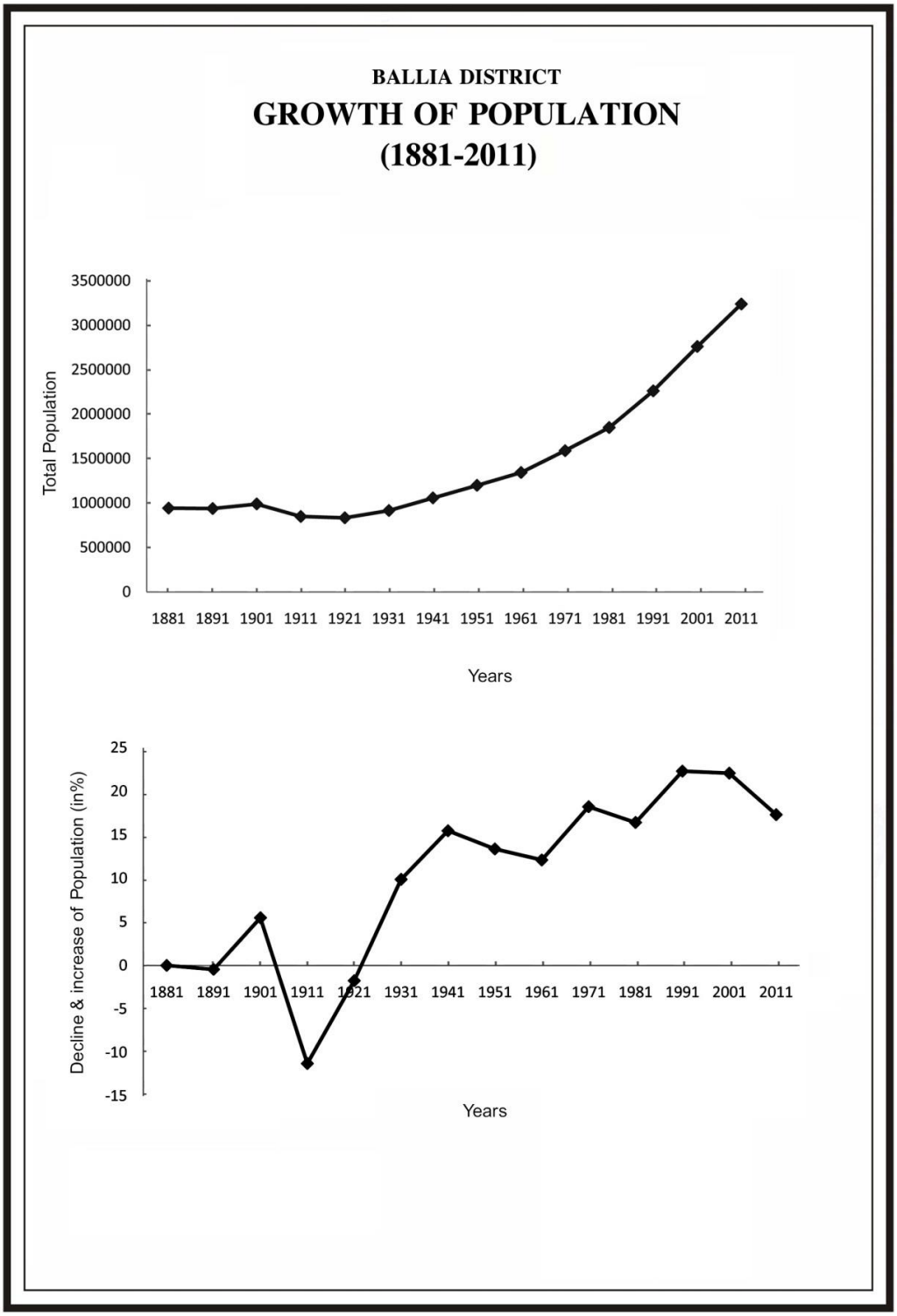

Fig. 2

3– तृतीय अवस्था (1961 – 1991 तक)–

तालिका संख्या 1 व मानचित्र संख्या 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि जनसंख्या वृद्धि के इस तृतीय अवस्था में 12.10 प्रतिशत से 22.30 प्रतिशत तक जनसंख्या वृद्धि की दर रही है। स्पष्ट है कि सन् 1961 में अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि दर 12.10 प्रतिशत, सन् 1971 में 18.22 प्रतिशत, सन् 1981 में 16.41 प्रतिशत व सन् 1991 में 22.30 प्रतिशत रही है। इस प्रकार हम कर सकते हैं कि सन् 1961 से 1991 तक अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या में वृद्धि प्रतिशत लगातार बढ़ती गई है।

4– चतुर्थ अवस्था (1991 के बाद)–

तालिका संख्या 1 व मानचित्र संख्या 2 से स्पष्ट है कि सन् 1991 के बाद अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि दर में लगातार कमी होती गई है सन् 2001 में अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि दर 22.07 प्रतिशत व सन् 2011 में 17.31 प्रतिशत पाया गया है। जिससे स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में अब लोगों में साक्षरता वृद्धि के कारण जनसंख्या वृद्धि में भी धीरे–धीरे गिरावट आ रही है।

विकासखंडवार जनसंख्या वृद्धि (1981–1991 व 2001–2011)–

जनसंख्या वृद्धि को और अधिक स्पष्ट करने के लिए वर्ष 1981–1991 की आधार वर्ष मानकर विकास खंडवार दशकीय जनसंख्या वृद्धि को प्रतिशत में व्यक्त किया गया है इस अवधि में सर्वाधिक जनसंख्या वृद्धि रसड़ा विकासखंड में 58.16 प्रतिशत तथा सबसे कम जनसंख्या वृद्धि चिलकहर विकासखंड में 1.92 प्रतिशत रही। इसके अतिरिक्त विकासखंड सियर में 5.21 प्रतिशत, नगरा 48.45 प्रतिशत, नवानगर 15.95 प्रतिशत, पन्दह 20.35 प्रतिशत, मनियर 22.19 प्रतिशत, बेरूआरबारी 23.57 प्रतिशत, बॉसडीह 24.1 प्रतिशत, रेवती 25.22 प्रतिशत, गड़वार 22.61 प्रतिशत, सोहॉव 18.76 प्रतिशत, हनुमानगंज 30.81 प्रतिशत, दुबहड़ 20.25 प्रतिशत, बेलहरी 9.23 प्रतिशत, बैरिया 22.42 प्रतिशत तथा मुरली छपरा 17.77 प्रतिशत में दशकीय वृद्धि दर पाई गई है। जो तालिका संख्या 2 से स्पष्ट है।

इसी प्रकार वर्ष 1991 – 2001 को आधार वर्ष मानकर विकासखंडवार जनसंख्या का दशकीय वृद्धि ज्ञात किया गया है, जो तालिका संख्या 2 से स्पष्ट है। वर्ष 1991 – 2001 में सर्वाधिक जनसंख्या वृद्धि विकासखंड रसड़ा में 93.06 प्रतिशत तथा सबसे कम दशकीय जनसंख्या वृद्धि सोहॉव विकासखंड में 14.08 प्रतिशत रही। जनपद के औसत जनसंख्या वृद्धि से कम जनसंख्या वृद्धि 8 विकासखंडो क्रमशः मनियार 21.43 प्रतिशत, बेरूआरबारी 21.46 प्रतिशत, रेवती 21.80 प्रतिशत, सोहॉव 14.08 प्रतिशत, दुबहड़ 18.00 प्रतिशत, बेलहरी 18.44 प्रतिशत, बैरिया 19.70 प्रतिशत, तथा मुरली छपरा 21.50 प्रतिशत विकासखंड में पाया जाता है। जबकि जनपदीय औसत से अधिक जनसंख्या वृद्धि 9 विकासखंडों क्रमशः सियर 24.22 प्रतिशत, नगरा 29.54 प्रतिशत, चिलकहर 23.51 प्रतिशत, नवानगर 25.53 प्रतिशत, पन्दह

22.74 प्रतिशत, बांसडीह 26.82 प्रतिशत, गड़वार 23.95 प्रतिशत व हनुमानगंज 25.90 प्रतिशत तथा रसड़ा 93.06 प्रतिशत विकासखंड में पाया जाता है। जो तालिका संख्या 2 से स्पष्ट है।

इसी प्रकार वर्ष 2001–2011 को आधार वर्ष मानकर अध्ययन क्षेत्र बलिया जनपद में विकासखंडवार दशकीय जनसंख्या वृद्धि को ज्ञात किया गया है– जो तालिका संख्या 2 स्पष्ट हो जाता है। वर्ष 2001 – 2011 में सर्वाधिक दशकिय जनसंख्या वृद्धि रेवती विकासखंड में 34.71 प्रतिशत पाया जाता है। जबकि सबसे कम दशकीय जनसंख्या वृद्धि बेरूआरबारी विकासखंड में 3.50 प्रतिशत पाया जाता है। जनपदीय औसत 18.01 प्रतिशत से अधिक दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर अध्ययन क्षेत्र के 6 विकासखण्ड़ों क्रमशः पन्दह 21.24 प्रतिशत, बाँसडीह 28.06 प्रतिशत, रेवती 34.71 प्रतिशत, गड़वार 23.50 प्रतिशत, सोहॉव 28.08 प्रतिशत एवं बेलहरी 22.35 प्रतिशत विकासखंड में पाया जाता है, जबकि जनपदीय औसत से कम दशकीय वृद्धि दर अध्ययन क्षेत्र के 11 विकास खण्ड़ो में पाया जाता है जिनमें सियर 15.85 प्रतिशत, नगरा 17.49 प्रतिशत, रसड़ा 13.13 प्रतिशत, चिलकहर 15.68 प्रतिशत, नवानगर 16.24 प्रतिशत, मनियर 11.36 प्रतिशत, बेरूआरबारी 3.50 प्रतिशत, हनुमानगंज 17.16 प्रतिशत, दुबहड़ 15.35 प्रतिशत, बैरिया 7.60 प्रतिशत, एवं मुरली छपरा 15.01 प्रतिशत विकासखंड सम्मिलित है जो तालिका संख्या 2 से स्पष्ट है।

बलिया जनपद में विकास खण्ड़वार दशकीय जनसंख्या वृद्धि

अध्ययन क्षेत्र बलिया जनपद के दशकीय जनसंख्या वृद्धि को विकास खंडवार स्पष्ट रूप से समझने के लिए इसे पांच श्रेणियां में विभक्त किया गया है जो तालिका संख्या तीन से स्पष्ट है

1–अति उच्च श्रेणी (25 प्रतिशत से अधिक)–

इस श्रेणी के अंतर्गत अध्ययन क्षेत्र के वे विकासखंड आते हैं, जिनमें 25 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या वृद्धि पाई जाती है। इस प्रकार सन 1981–1991 में इस श्रेणी के अंतर्गत चार विकासखंड क्रमशः नगरा 48.45 प्रतिशत, रसड़ा 58.16 प्रतिशत, रेवती 25.22 प्रतिशत व हनुमानगंज 30.81 प्रतिशत विकासखंड आते हैं, जबकि इसी श्रेणी में सन् 1991–2001 में पांच विकासखंड क्रमशः नगरा 29.64 प्रतिशत, रसड़ा 93.06 प्रतिशत, नवानगर 25.53 प्रतिशत, बाँसडीह 26.82 प्रतिशत व हनुमानगंज 25.90 प्रतिशत आते थे। वहीं सन् 2001 से 2011 के दशक में इसी श्रेणी में तीन विकासखंड आते हैं जिनमें बांसडीह 28.06 प्रतिशत, रेवती 34.71 प्रतिशत व सोहॉव 28.08 प्रतिशत विकासखंड सम्मिलित हैं जो तालिका संख्या 2, 3, 4 व 5 तथा मानचित्र संख्या 3 से स्पष्ट है।

तालिका संख्या –2

बलिया जनपदः विकासखण्डवार जनसंख्या का दशकीय वृद्धि (प्रतिशत में)

क्रम सं0	विकासखण्ड	जनसंख्या वृद्धिदर (प्रतिशत में)		
		1981-1991	1991-2001	2001-2011
1	सियर	5.21	24.22	15.85
2	नगरा	48.45	29.64	17.49
3	रसड़ा	58.16	93.06	13.13
4	चिलकहर	1.92	23.51	15.68
5	नावानगर	15.95	25.53	16.24
6	पन्दह	20.35	22.74	21.24
7	मनियर	22.19	21.43	11.36
8	बेरूआरबारी	23.57	21.46	3.50
9	बाँसडीह	24.01	26.82	28.06
10	रेवती	25.22	21.80	34.71
11	गड़वार	20.61	23.95	23.50
12	सोहॉव	18.76	14.08	28.08
13	हनुमानगंज	30.81	25.90	17.06
14	दुबहड़	20.25	18.00	15.35
15	बेलहरी	10.23	18.44	22.35
16	बैरिया	22.42	19.70	7.60
17	मुरलीछपरा	17.77	21.50	15.01
योग	ग्रामीण	21.84	22.24	18.01
	नगरीय	26.67	26.46	12.66
	जनपदीय औसत	22.30	22.87	17.31

2– उच्च श्रेणी (20 – 25 प्रतिशत तक)–

इस श्रेणी के अंतर्गत अध्ययन क्षेत्र के वे जनपद आते हैं जिनमें जनसंख्या वृद्धि दर 20–25 प्रतिशत तक पाई जाती है। इस प्रकार सन् 1981–1991 के दशक में इस श्रेणी में अध्ययन क्षेत्र के 7 विकासखंड क्रमशः पन्दह 20.35 प्रतिशत, मनियर 22.19 प्रतिशत, बेरूआरबारी 23.57 प्रतिशत, बाँसडीह 24.01 प्रतिशत, गड़वार 20.61 प्रतिशत दुबहड़ 20.25 प्रतिशत व बैरिया 22.42 प्रतिशत विकासखंड आते थे (मानचित्र संख्या 3)। जबकि सन् 1991–2001 के दशक में इसी श्रेणी में 8 विकासखंड क्रमशः सीयर 24.22 प्रतिशत, चिलकहर 23.51 प्रतिशत, पन्दह 22.74 प्रतिशत, मनियर 21.43 प्रतिशत, बेरूआरबारी 21. 46 प्रतिशत, रेवती 21.80 प्रतिशत, गड़वार 23.95 प्रतिशत व मुरलीछपरा 21.50 प्रतिशत विकासखंड आते थे, वही सन 2001 – 2011 के दशक में इसी श्रेणी में तीन विकासखंड क्रमशः पन्दह 21.24 प्रतिशत,

गड़वार 23.50 प्रतिशत व बेलहरी 22.35 प्रतिशत विकासखण्ड आते हैं जो तालिका संख्या 2, 3, 4 व 5 तथा मानचित्र संख्या 3 से स्पष्ट है।

3– मध्यम श्रेणी (15 – 20 प्रतिशत तक)–

इस श्रेणी में अध्ययन क्षेत्र के वे विकासखण्ड आते हैं, जिनमें जनसंख्या वृद्धि 15–20 प्रतिशत तक पाया जाता है। इस प्रकार 1981–1991 के दशक में इस श्रेणी में अध्ययन क्षेत्र के 3 विकासखंड क्रमशः नवानगर 15.95 प्रतिशत, सोहॉव 18.76 प्रतिशत व मुरलीछपरा 17.77 प्रतिशत आते थे, जो अध्ययन क्षेत्र के कुल विकासखण्ड़ों का 23.53 प्रतिशत भाग का प्रतिनिधित्व करते थे, जो तालिका संख्या 2 व 3 तथा मानचित्र संख्या 3 से स्पष्ट है। जबकि इसी श्रेणी में सन 1991–2001 के दशक में भी 3 विकासखंड क्रमशः दुबहड़ 18.00 प्रतिशत, बैरिया 19.70 प्रतिशत व बेलहरी 18.44 प्रतिशत आते थे, जो अध्ययन क्षेत्र के कुल विकासखण्ड़ों के 25.53 प्रतिशत भाग का प्रतिनिधित्व करते थे (तालिका संख्या 2 व 4 तथा मानचित्र संख्या 3)। सन् 2001–2011 के दशक में अध्ययन क्षेत्र के कुल विकासखंडों के 41.18 प्रतिशत अर्थात 7 विकासखंड आते हैं, जिनमें सीयर 15.85 प्रतिशत, नगरा 17.49 प्रतिशत,

तालिका संख्या –3

बलिया जनपदः दशकीय जनसंख्या वृद्धि का श्रेणीगत विवरण 1981–1991

श्रेणी वर्ग	प्रतिशत समूह	विकासखण्डों की संख्या	कुल विकसखण्डों का प्रतिशत	विकसखण्डों के नाम
अति उच्च	25 से अधिक	4	23.53	नगरा, रसड़ा, रेवती व हनुमानगंज
उच्च	20–25	7	41.18	पन्दह, मनियर , बेरूआरबारी, बाँसडीह, गड़वार, दुबहड़ व बैरिया
मध्यम	15–20	3	23.53	नावानगर, सोहॉव व मुरलीछपरा
निम्न	10–15	1	5.88	बेलहरी
अति निम्न	10 से कम	2	11.76	सियर व चिलकहर

तालिका संख्या –4

बलिया जनपदः दशकीय जनसंख्या वृद्धि का श्रेणीगत विवरण 1991–2001

श्रेणी वर्ग	प्रतिशत समूह	विकासखण्डों की संख्या	कुल विकसखण्डों का प्रतिशत	विकसखण्डों के नाम
अति उच्च	25 से अधिक	5	29.41	नगरा, रसड़ा, नावानगर, बाँसडीह,व हनुमानगंज
उच्च	20–25	8	47.06	सियर, चिलकहर, पन्दह, मनियर, बेरूआरबारी, रेवती, गड़वार व मुरलीछपरा
मध्यम	15–20	3	23.53	दुबहड़, बैरिया वबेलहरी
निम्न	10–15	1	5.88	सोहॉव
अति निम्न	10 से कम	0	0.00	–

तालिका संख्या –5

बलिया जनपदः दशकीय जनसंख्या वृद्धि का श्रेणीगत विवरण 2001–2011

श्रेणी वर्ग	प्रतिशत समूह	विकासखण्डों की संख्या	कुल विकसखण्डों का प्रतिशत	विकसखण्डों के नाम
अति उच्च	25 से कम	3	23.53	बाँसडीह, रेवती व सोहॉव
उच्च	20–25	3	23.53	पन्दह, गड़वार वबेलहरी
मध्यम	15–20	7	41.18	सियर, नगरा, चिलकहर, नवानगर, हनुमानगंज, दुबहड़ व मुरलीछपरा
निम्न	10–15	2	11.76	रसड़ा व मनियर
अति निम्न	10 से कम	2	11.76	बेरूआरबारी व बैरिया

चिलकहर 15.68 प्रतिशत, नवानगर 16.24 प्रतिशत, हनुमानगंज 17.06 प्रतिशत, दुबहड़ 15.35 प्रतिशत व मुरलीछपरा 15.01 प्रतिशत विकासखंड आते हैं, जो तालिका संख्या 2 व 5 तथा मानचित्र संख्या 3 से स्पष्ट है।

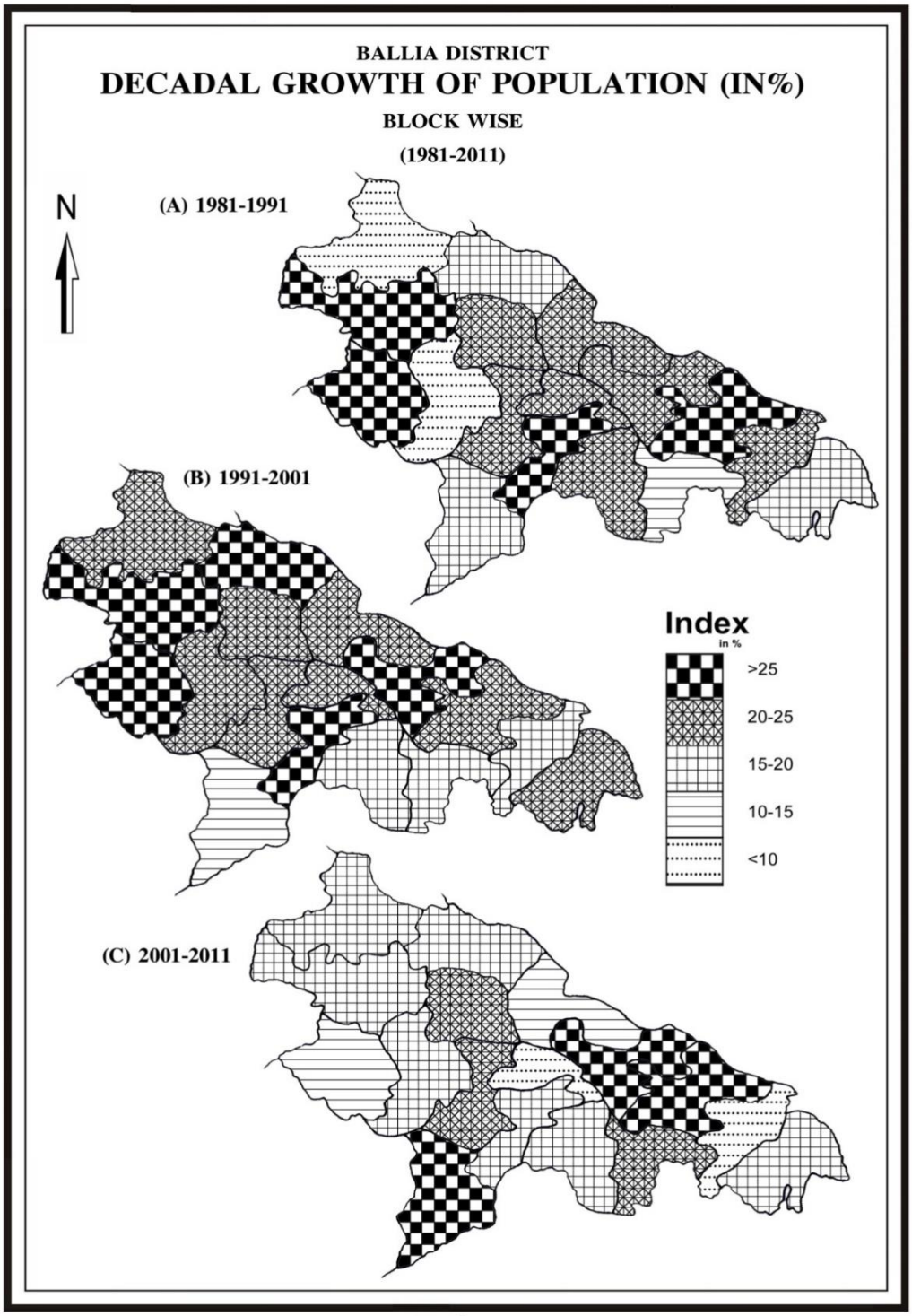

Fig. 3

4– निम्न श्रेणी (10– 15 प्रतिशत तक)–

जनसंख्या वृद्धि के अंतर्गत इस श्रेणी में अध्ययन क्षेत्र के वे विकासखंड आते हैं, जिनकी जनसंख्या वृद्धि 10–15 प्रतिशत तक पाई जाती है। इस प्रकार इस श्रेणी में सन 1981–1991 के दशक

में एक विकासखंड बेलहरी 10.23 प्रतिशत आता है। जबकि इसी श्रेणी में सन् 1991–2001 के दशक में एक विकासखंड सोहॉव 14.08 प्रतिशत आता है, वहीं इसी श्रेणी में सन् 2001 से 2011 के दशक में दो विकासखंड क्रमशः रसड़ा 13.13 प्रतिशत व मनियर 11.36 प्रतिशत आते हैं। जो कुल विकासखंडों के 11.76 प्रतिशत भाग का प्रतिनिधित्व करते हैं। जो तालिका संख्या 2 व 5 तथा मानचित्र संख्या 3 से स्पष्ट है।

5– अति निम्न श्रेणी (10 प्रतिशत से कम)–

जनसंख्या वृद्धि के इस श्रेणी में अध्ययन क्षेत्र के वे विकासखंड आते हैं जिनकी जनसंख्या वृद्धि 10 प्रतिशत से कम पाई जाती है। इस प्रकार इस श्रेणी में सन् 1981–1991 के दशक में दो विकासखंड सियर 5.21 प्रतिशत व चिलकहर 1.92 प्रतिशत आते हैं। जो अध्ययन क्षेत्र के कुल विकासखण्ड़ों के 11.76 प्रतिशत भाग का प्रतिनिधित्व करते हैं, जबकि इसी श्रेणी में सन् 1991–2001 के दशक में कोई भी विकासखंड नहीं आता था। वहीं इसी श्रेणी में सन् 2001–2011 के दशक में अध्ययन क्षेत्र के दो विकासखंड क्रमशः बेरूआरबारी 3.50 प्रतिशत व बैरिया 7.60 प्रतिशत आते हैं। जो अध्ययन क्षेत्र के कुल विकासखण्ड़ों के 11.76 प्रतिशत भाग का प्रतिनिधित्व करते हैं।

जनसंख्या वृद्धि के प्रभावक

जनसंख्या वृद्धि को प्रभावित करने वाले कारकों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है–

A- प्राकृतिक कारक

B- सांस्कृतिक कारक

A- प्राकृतिक कारक

किसी भी क्षेत्र में धरातल जलवायु, मिट्टी, जल संसाधन तथा प्रकृति वनस्पति आदि का जनसंख्या वृद्धि पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। बलिया जनपद गंगा–घाघरा की सहायक नदियों द्वारा लाये गये पदार्थो से निर्मित उपजाऊ मैदानी भाग है। जहां 70 प्रतिशत से अधिक भाग पर कृषि की जाती है तथा इसके अलावा उत्तम स्वास्थ्यवर्धक जलवायु, पर्याप्त उपजाऊ समतल भूमि व अधो भौमिक जल संसाधन इत्यादि कारक आदिकाल से जनसंख्या के आकर्षण एवं तीव्र जनसंख्या वृद्धि के लिए उत्तरदायी है।

B- सांस्कृतिक कारक

जनसंख्या वृद्धि में सांस्कृतिक कारकों का प्रत्यक्ष योगदान होता है बाल विवाह, बहु–विवाह, निरीक्षण का स्वास्थ्य सुविधाओं का विकास, मृत्यु दर में कमी तथा मनोरंजन के साधनों का अभाव आदि का जनसंख्या वृद्धि पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। ग्रामीण क्षेत्रों में अशिक्षा के कारण परिवार नियोजन के प्रति उपेक्षा तथा संतान उत्पत्ति को ईश्वर की देन माना जाता है। जो जनसंख्या वृद्धि का प्रमुख कारण है।

प्रोफेसर एडम स्मिथ ने ठीक ही कहा है कि दीनता और निर्धनता संतान उत्पत्ति के अनुरूप होती है। इसके अतिरिक्त बहू–पत्नी विवाह, अधिक संतान उत्पत्ति की इच्छा, अधिक बच्चे होने पर अधिक कमाने वाले होंगे जैसे विचार आदि ऐसे कारण है जो जनपद में जनसंख्या वृद्धि को प्रोत्साहित करते हैं।

निष्कर्ष

अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि को चार अवस्थाओं में विभक्त किया गया है। प्रथम अवस्था सन् 1921 से पूर्व के वर्षों का है। इस अवस्था में जनपद की जनसंख्या वृद्धि का दर ऋणात्मक रहा है, जबकि द्वितीय अवस्था में जनपद की जनसंख्या वृद्धि का औसत 13.05 प्रतिशत रही हैं। वहीं जनसंख्या वृद्धि की तृतीय अवस्था में जनपद की जनसंख्या वृद्धि 12.10 प्रतिशत से 22.30 प्रतिशत तक रही हैं। जनसंख्या वृद्धि की तृतीय अवस्था 1961 से 1991 तक रही हैं। जबकि जनसंख्या वृद्धि की चतुर्थ अवस्था सन 1991 के बाद के वर्षों का रहा है। इस अवस्था में जनपद की जनसंख्या वृद्धि दर में लगातार कमी होती गई, जो जनसंख्या वृद्धि दर 1991 में 22.30 प्रतिशत थी, वह घटकर 2001 में 22. 07 प्रतिशत व सन् 2011 में 17.31 प्रतिशत तक आ गई। जनपद में विकासखंड स्तर पर सन् 1981–1991 में जनसंख्या वृद्धि 4 विकासखण्डों में अति उच्च एवं दो विकासखण्डों में अति निम्न तथा सन् 1991 से 2001 में पांच विकासखण्डों में अति उच्च एक विकासखंड में निम्न एवं सन् 2001–2011 के दशक में जनसंख्या वृद्धि तीन विकासखण्डों में अति उच्च एवं दो विकासखण्डों में अति निम्न रहा है। अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि को निरपेक्ष एवं प्रतिशत में भी व्यक्त किया गया है। जनसंख्या वृद्धि के प्रभावकों पर भी दृष्टिपात किया गया है।

संदर्भ

1. मोहम्मद इस्लाम (2001) : बलिया जनपद में नगरीकरण एवं सामाजार्थिक विकास अप्रकाशित शोध प्रबंध, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर, पृष्ठ 59,
2. पांडा बी0पी0(1998) : जनसंख्या भूगोल मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी भोपाल, पृष्ठ 78।
3. लाल हीरा (2000) : जनसंख्या भूगोल राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 66।
4. कोहन सी0 एफ0 (1940) : पापुलेशन ट्रेंड्स इन द यूनाइटेड स्टेट, साइंस 1940 ज्योग्राफिकल रिव्यू न्यू यॉर्क, 1995 योल 25 पी0 पी0 96 – 106।
5. नायडू के0 मुनिरत्ना(1987) : बैंकिंग एंड रूरल डेवलपमेंट इन हिमालय पब्लिशिग हाउस बॉम्बे पृष्ट 287 – 310।